12/11/2023
राष्ट्रीय सहारा
पृष्ठ 16, मूल्य ₹ 4.00 राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण नगर संस्करण

पटाखें चलाएं, लेकिन बेजुबानों का भी रखें ध्यान

ुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि ौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन कों ने लोगों से कहा है कि वह दीपावली के व उल्लास के साथ निरीह पशुओं और ं का ध्यान भी रखें। वताया कि पटाखों के । पशुपक्षी विभिन्न वा रोगों के शिकार हो ।

स सम्वंध में एडवाइजरी करते हुए पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने क दीपावली पर जिन पटाखों का प्रयोग किया है, उन्हें जलाने पर सल्फर डाईऑक्साइड, डाईऑक्साड और कार्वन मोनो ऑक्साइड ज़हरीली गैसें निकलती हैं, जिनके कारण पशु- ्वांस रोगों का शिकार हो जाते हैं और इस के चलते पशुपक्षियों में मृत्यु की दर वढ़ है। इसी तरह पटाखों की आवाज की तीव्रता 140 से 150 डेसिवल तक होती है। यह आवाज इतनी अधिक होती है कि मनुष्यों के लिए असहनीय हो जाती है, पशु और पक्षी तो इसे सह ही नहीं सकते। पटाखों की तेज आवाजों के चलते पशुपक्षी उग्र हो जाते हैं।

पशुपालन वैज्ञानिकों ने कहा पटाखों से पशुओं-पक्षिओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है विपरीत असर

दुधारू पशुओं का दूध कम हो जाता है और जिन पशुओं के गर्भ होता है, उनका गर्भपात हो जाता है। पालतू या गली मोहल्लों के कुत्ते डरे सहमे एकांत की तलाश किया करते हैं। पटाखों की आवाज से सर्वाधिक नुकसान पक्षियों को होता है, जो इनकी धमक से घोसले के अंदर ही दम तोड़ देते हैं। पटाखे की आवाज 90 डेसिवल से कम होनी चाहिये, जो पशुपक्षी भी सहन कर सकें। उन्होंने राय दी कि पटाखे ऐसे स्थान पर चलाने चाहिये, जहां पालतू जानवर न हों। साथ ही पटाखे चलाते समय एक वाल्टी पानी अपने पास जरूर रखना चाहिये।

Title-code: UPHIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

Sunday 12th November 2023 jksingh.hardoi@gmail.com website: satyakaasar.com

दीपावली में पटाखा चलाते समय पशु पक्षियों का भी रखें ध्यान: डॉ शशिकांत

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने दीपावली के त्योहार पर आतिशबाजी से पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर एडवाइजरी जारी किया उन्होंने बताया कि दीपावली पर जिन पटाखों का प्रयोग होता है उसमें से सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड, मोनो डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैस निकलती हैं जिससे पशु पक्षियों को इन गैसों से स्वांस रोग हो जाता है जिससे पशु पक्षियों के में मृत्यु दर बढ़ जाता है इन पटाखों की तीव्रता लगभग 140 से 150 डेसिबल होता है।जो सामान्य जनों के कानों में असहनी होता है जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के रोग हो जाता है साथ ही गर्भित पशुओं का गर्भपात होने की प्रबल संभावना होती है एवं दुधारू पशुओं का दूध कम हो जाता है पशु उग्र हो जाते हैं पालतू कुत्ते डरे शहर में रहते हैं तथा जी तथा एकांत स्थान की तलाश में रहते हैं। इन पटाखों की सबसे ज्यादा नुकसान परिंदों को होता है जो अपने घोंसले में ही इन आवाजों को सुनकर दम तोड़ देते हैं जबकि पटाखे की आवाज 90 डेसीबल से भी कम होना चाहिए जो पशु पक्षियों के लिए क्षति न पहुंचाएं। उन्होंने सलाह दी है कि ऐसे पटाखे का प्रयोग करना चाहिए एवं पटाखे ऐसे स्थान पर चलाना चाहिए जहां पालतू जानवर न हो।साथ ही पटाखे चलाते समय अपने पास कम से कम एक बाल्टी पानी अवश्य रखें। जिससे कोई घटना घटित होने से पूर्व ही उसको नियंत्रित किया जा सके।

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-246 कानपुर, रविवार 12 नवम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

नपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौहदा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

दीपावली में पटाखा चलाते समय पशु पक्षियों का भी रखें ध्यान-डॉ शशिकांत

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने दीपावली के त्योहार पर आतिशबाजी से पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर एडवाइजरी जारी किया उन्होंने बताया कि दीपावली पर जिन पटाखों का प्रयोग होता है उसमें से सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड, मोनो डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैस निकलती हैं जिससे पशु पक्षियों को इन गैसों से स्वांस रोग हो जाता है जिससे पशु पक्षियों के में मृत्यु दर बढ़ जाता

है इन पटाखों की तीव्रता लगभग 140 से 150 डेसिबल होता है।जो सामान्य जनों के कानों में असहनी होता है जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के रोग हो जाता है साथ ही गर्भित पशुओं का गर्भपात होने की प्रबल संभावना होती है एवं दुधारू पशुओं का दूध कम हो जाता है पशु उग्र हो जाते हैं पालतू कुत्ते डरे शहर में रहते हैं तथा जी तथा एकांत स्थान की तलाश में रहते हैं। इन पटाखों की सबसे ज्यादा नुकसान परिंदों को होता है जो अपने घोंसले में ही इन आवाजों को सुनकर दम तोड़ देते हैं जबकि पटाखे की आवाज 90 डेसीबल से भी कम होना चाहिए जो पशु पक्षियों के लिए क्षति न पहुंचाएं। उन्होंने सलाह दी है कि ऐसे पटाखे का प्रयोग करना चाहिए एवं पटाखे ऐसे स्थान पर चलाना चाहिए जहां पालतू जानवर न हो।साथ ही पटाखे चलाते समय अपने पास कम से कम एक बाल्टी पानी अवश्य रखें। जिससे कोई घटना घटित होने से पूर्व ही उसको नियंत्रित किया जा सके।

दीपावली में पटाखा चलाते समय पशु पक्षियों का भी रखें ध्यान..

डॉ शशिकांत

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने दीपावली के त्योहार पर आतिशबाजी से पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर एडवाइजरी जारी किया उन्होंने बताया कि दीपावली पर जिन पटाखों का प्रयोग होता है उसमें से सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड, मोनो डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैस निकलती हैं जिससे पशु पक्षियों को इन गैसों से स्वांस रोग हो जाता है जिससे पशु पक्षियों के में मृत्यु दर बढ़ जाता है इन पटाखों की तीव्रता लगभग 140 से 150 डेसिबल होता है।जो सामान्य जनों के कानों में असहनी होता है जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के रोग हो जाता है साथ ही गर्भित पशुओं का गर्भपात होने की प्रबल संभावना होती है एवं दुधारू पशुओं का दूध कम हो जाता है पशु उग्र हो जाते हैं पालतू कुत्ते डरे शहर में रहते हैं तथा जी तथा एकांत स्थान की तलाश में रहते हैं। इन पटाखों की सबसे ज्यादा नुकसान परिंदों

को होता है जो अपने घोंसले में ही इन आवाजों को सुनकर दम तोड़ देते हैं जबकि पटाखे की आवाज 90 डेसीबल से भी कम होना चाहिए जो पशु पक्षियों के लिए क्षति न पहुंचाएं। उन्होंने सलाह दी है कि ऐसे पटाखे का प्रयोग करना चाहिए एवं पटाखे ऐसे स्थान पर चलाना चाहिए जहां पालतू जानवर न हो।साथ ही पटाखे चलाते समय अपने पास कम से कम एक बाल्टी पानी अवश्य रखें। जिससे कोई घटना घटित होने से पूर्व ही उसको नियंत्रित किया जा सके।

दीपावली में पटाखा ज लाते समय पशु पक्षियों का भी रखें ध्यान: डॉ शशिकांत

रहस्य संदेश-अनवर अशरफ

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने दीपावली के त्योहार पर आतिशबाजी से पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर एडवाइजरी जारी किया उन्होंने बताया कि दीपावली पर जिन पटाखों का प्रयोग होता है उसमें से सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड, मोनो डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैस निकलती हैं जिससे पशु पक्षियों को इन गैसों से स्वांस रोग हो जाता है जिससे पशु पक्षियों के में मृत्यु दर बढ़ जाता है इन पटाखों की तीव्रता लगभग 140 से 150 डेसिबल होता है।जो सामान्य जनों के कानों में असहनी होता है जिसकी वजह से विभिन्न प्रकार के रोग हो जाता है साथ ही गर्भित पशुओं का गर्भपात होने की प्रबल संभावना होती है एवं दुधारू पशुओं का दूध कम हो जाता है पशु उग्र हो जाते हैं पालतू कुत्ते डरे शहर में रहते हैं तथा जी तथा एकांत स्थान की तलाश में रहते हैं। इन पटाखों की सबसे ज्यादा नुकसान परिंदों को होता है जो अपने घोंसले में ही इन आवाजों को सुनकर दम तोड़ देते हैं जबकि पटाखे की आवाज 90 डेसीबल से भी कम होना चाहिए जो पशु पक्षियों के लिए क्षति न पहुंचाएं। उन्होंने सलाह दी है कि ऐसे पटाखे का प्रयोग करना चाहिए एवं पटाखे ऐसे स्थान पर चलाना चाहिए जहां पालतू जानवर न हो।साथ ही पटाखे चलाते समय अपने पास कम से कम एक बाल्टी पानी अवश्य रखें। जिससे कोई घटना घटित होने से पूर्व ही उसको नियंत्रित किया जा सके।